शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

भारतीय वाङ्गमय में समन्वय की विराट चेष्टा करने वाले महामति प्राणनाथ का जीवन दर्शन

डॉ० सुलक्षणा टोप्पो
डॉ० संध्या कुमारी
ई/३५, जीनिया,
आशियाना गार्डेन्स सोनारी,
जमशेदपुर, झारखण्ड

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

भारतीय वाङ्गमय में समन्वय की विराट चेष्टा करने वाले महामति प्राणनाथ का जीवन दर्शन

- डॉ० सुलक्षणा टोप्पो*
- डॉ० संध्या कुमारी**

हिन्दी साहित्य का रीतिकाल अपने प्रेम व श्रृंगारिक वर्णन के लिए जाना जाता है। उस काल में अधिकतर कवियों ने प्रेम-श्रृंगार के विषय को लेकर रचनाएँ की हैं। किन्तु कवि महामति प्राणनाथ ने समन्वय का भाव अपनाते हुए भक्ति साहित्य की रचना की। प्रस्तुत लेख में महामति प्राणनाथ के जीवन दर्शन के कुछ अनजान पक्षों की चर्चा की गयी है।

विषय संकेतः- प्रणामी साहित्य, प्राणनाथ, प्रणामी सम्प्रदाय, जागनी मंत्र, सुन्दर-साथ, निजानंद संप्रदाय, पाँचवी भक्तिधारा, निष्कलंक बुद्ध, कुलजम स्वरूप, जागनी अभियान

संत त महामति प्राणनाथ का आगमन औरंगजेब जैसे क्रूर एवं कट्टर मुसलमान के शासनकाल में हुआ था, जिसने न केवल गैर-मुसलमानों को बल्कि सजातीय शिया मुसलमानों को भी अपनी अंधी सनक का शिकार बनाया। ऐसे समय में महामति प्राणनाथ ने अपनी प्रखर बुद्धि, अद्भुत व्यक्तित्व एवं विलक्षण सूझ-बूझ से तत्कालीन समाज में फैली विषमता को दूर करने का सफल प्रयास किया। महामति प्राणनाथ का जीवन दर्शन उनके गहन अनुभव का निचोड़ है, जिसे उन्होंन सरल एवं सहज रूप से जनता के सामने रखा और प्रेम भाव से परिपूर्ण जागनी अभियान का सूत्रपात किया, जिसमें सभी धर्मों के मूल में एक ही परमात्मा के स्वरूप को व्याख्यायित करने का प्रयास है।

भारत में धर्म एवं संस्कृति एक दूसरे के पूरक माने जाते हैं। हमारी दृष्टि में धर्म वह है जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के हृदय से जोड़े और संस्कृति, जो व्यक्ति में एक दूसरे से जुड़े रहने का संस्कार पैदा करे। धर्म का बाह्य रूप आडंबर और अंधविश्वास है किन्तु उसका आन्तरिक रूप कल्याणकारी और अपरिवर्तित है, जिससे प्रेरित होकर हमें विश्वबंधुत्व का मार्ग प्रशस्त करना होगा। इस भावना को मानव समाज में स्थापित करने के लिए हमें एक दूसरे को समझना होगा, उनकी जीवन शैली, भाषा, धर्म, संस्कृति का सम्मान करना होगा। वैश्वीकरण ने जहाँ हमें आज उन्मुक्त विचरण का अवसर दिया है, वहीं प्रतिस्पर्धा की दौड़ ने हमें स्वार्थी और आत्म केंद्रित बना दिया है। आज की इस जटिल स्थिति में जीवन निर्वाह के लिए हमें एक ऐसे जीवन दर्शन की आवश्यकता है जो हमारी संस्कृति, धर्म पर आस्था और अस्तित्व की रक्षा कर सके। इस दृष्टि से महामति प्राणनाथ का समन्वयवादी जीवन दर्शन सहज ही आकर्षित करता है, उनका 'सुन्दर-साथ' भाव मानव की सच्ची संपत्ति और विश्व को अपूर्व देन है। आज भारत की एकता और अखण्डता के लिए सुन्दरसाथ भाव को समझने और समझाने की आवश्यकता बनी हुई है।

हिन्दी साहित्य के रीतिकाल में जब कवि समाज, श्रृंगारिक अभिव्यक्ति में तल्लीन था और भारतीय मानस, धार्मिक कर्मकाण्ड और सामाजिक वैमनस्य से आक्रांत था, तब हिंदू और मुसलमान संप्रदाय के बीच समन्वय का प्रयास महामति प्राणनाथ ने किया। इसी काल में रीति साहित्य के समानांतर भक्ति साहित्य भी लिखा जा रहा था, जिसे आधुनिक काल के विद्वानों ने 'प्रणामी साहित्य' की संज्ञा दी है। 'प्रणामी संप्रदाय' के प्रवर्तक महामति प्राणनाथ माने गए हैं। 'प्रणामी साहित्य' और 'प्रणामी संप्रदाय' को प्रकाश में लाने का श्रेय डॉ0 माताबदल जायसवाल को जाता है, जिन्होंने अपने अथक प्रयास से इस संप्रदाय की महत्ता प्रतिपादित की। सर्वप्रथम डॉ0 लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने भक्तिकाल की पाँचवीं भक्ति धारा के रूप में 'प्रणामी साहित्य' को

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

भारतीय वाङ्गमय में समन्वय की विराट चेष्टा करने वाले महामति प्राणनाथ का जीवन दर्शन

डॉ० सुलक्षणा टोप्पो
डॉ० संध्या कुमारी
ई/३५, जीनिया,
आशियाना गार्डेन्स सोनारी,
जमशेदपुर, झारखण्ड

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

मान्यता दी और कहा कि 'प्रणामी संप्रदाय' का साहित्य मध्ययुग की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए नितांत मौलिक और बहुत कुछ आधुनिक विचार-धारा से मिलता हुआ जीवन दर्शन है। इस जीवन दर्शन में जिस क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की चर्चा है, वह समाज के लिए अत्यंत उपयोगी है।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार भक्तिकाल के सगुण एवं निर्गुण भक्त कवियों में सूर, तुलसी, मीराबाई, कबीर, जायसी आदि से तो सभी सुपरिचित हैं, किंतु रीति काल में विकसित होने वाले 'प्रणामी भक्ति-सम्प्रदाय' के महाकवि संत महामति प्राणनाथ जन-जन में विख्यात नहीं हुए हैं। इस महाकवि ने रीतिकाल में अवतार ग्रहण कर विलासिता के रंग में डूबी हुई जनता को जागृत करने में अपना अपूर्व योगदान दिया। भक्तिकाल के सगुण भक्त कवियों ने सगुण ईश्वर के स्वरूप को दर्शाकर उनकी लीलाओं द्वारा समाज में आदर्श की स्थापना की और निर्गुण भक्त कवियों ने ईश्वर के निराकार रूप को प्रस्तुत कर प्रकृति के कण-कण में व्याप्त बताया। भक्तिकालीन साहित्य में समाज की विषमताओं को दूर करने का थोड़ा प्रयास तुलसी में तो अवश्य दिखाई पड़ता है, परन्तु सूर ने इसकी कोई चर्चा नहीं की। निर्गुण संत सम्प्रदाय के कवियों कबीर, दादूदयाल, धर्मदास, मलूकदास आदि ने धार्मिक एकता एवं एकेश्वरवाद की प्रतिष्ठा सामाजिक विषमता को दूर करने के उद्देश्य से किया, तो सूफियों ने लौकिक प्रेम द्वारा अलौकिक प्रेम को प्रस्तुत किया, परन्तु संत महामति प्राणनाथ ने समाज में व्याप्त धार्मिक कर्मकांड, सामाजिक कुरीतियों की खाई को पाटने के लिए सगुण एवं निर्गुण दोनों से परे एक ऐसे धर्म की प्रतिष्ठा की, जिसमें सूर, तुलसी, कबीर, जायसी, आदि सभी भक्त कवियों की धार्मिक मान्यताओं का योग दिखाई पड़ता है। इन्होंने एक ओर सूफी एवं संत कवियों के अनुरूप ईश्वर के रसेश्वर एवं अक्षरातीत रूप को प्रस्तुत किया, तो दूसरी ओर सगुण भक्त कवियों के उपास्य देव के लोकरक्षक एवं धर्मरक्षक रूप को धूमिल होने से बचाया।

'रीतिकाल' में भक्ति साहित्य को जीवित रखने वाले इस महान प्रतिभाशाली संत का जन्म गुजरात के जामनगर शहर में सितम्बर 1618 ई0 को हुआ था। इनके पिता केशवराय और माता धानबाई धार्मिक प्रवृति के थें, जिनका प्रभाव इन पर भी पड़ा। 12 वर्ष की अवस्था में इन्होंने श्री देवचन्द्रजी से शिष्यता ग्रहण की। बड़े होने पर जामनगर में ही इन्हें अपने पिता का प्रधानमंत्री पद उत्तराधिकार में मिला, परन्तु किसी मिथ्या अपराध के कारण इन्हें कारावास में डाल दिया गया, जहाँ उन्हें दिव्यवाणी सुनाई दी। कारावास में ही उन्होंने 'श्री रास' नामक ग्रन्थ की रचना की। यह ग्रन्थ इनका प्रथम ग्रन्थ है। इन्होंने कुल 14 ग्रन्थों का प्रणयन किया, जिनका संकलन 'कुलजम स्वरूप' में है। महामति प्रणीत ग्रन्थ निम्नलिखित है :-

1. श्री रास (1658 ई0)
2. प्रकाश गुजराती (1658 ई0)
3. षट्ऋतु (1658 ई0)
4. कलस गुजराती (1672 ई0)
5. सनंध (1679 ई0)
6. किरंतन (1686 ई0)
7. खुलासा (1690 ई0)
8. खिलवत (1690 ई0)
9. परिक्रमा (1690 ई0)
10. सागर (1688 ई0)
11. सिनगार (1690 ई0)
12. सिंधी (1690 ई0)
13. मारफत सागर (1691 ई0)
14. कयामतनामा (1690 ई0)

इनमें से प्रथम चार रचनाएँ गुजराती भाषा में रचित है। 'सिंधी' की रचना सिंधी भाषा में हुई है और शेष ग्रन्थ मध्यकालीन खड़ी बोली में रचित है, जिसमें अरबी-फारसी एवं उर्दू शब्दों का मिश्रण दिखाई पड़ता

शोध संचयन SHODH SANCHAYAN

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

भारतीय वाङ्गमय में समन्वय की विराट चेष्टा करने वाले महामति प्राणनाथ का जीवन दर्शन

डॉ० सुलक्षणा टोप्पो
डॉ० संध्या कुमारी
ई/३५, जीनिया,
आशियाना गार्डेन्स सोनारी,
जमशेदपुर, झारखण्ड

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

है। इसमें कुल 1612 पृष्ठ एवं 18758 चौपाइयाँ है। इन सभी ग्रन्थों में कवि का आध्यात्मिक स्वर ही मुखरित हुआ है।

1) 'श्री रास' में कवि ने माया के संबंध में अपना विचार प्रस्तुत कर उसे अज्ञानता और भ्रम में फंसानेवाला बताया है। जीवन को इस माया से मुक्ति गुरू कृपा से ही मिल सकती है।

2) 'प्रकाश गुजराती' में कवि ने क्षणभंगुर जगत में लीन होने वाले जीव को जागृत करने का प्रयास किया है। इसका हिन्दी अनुवाद 'प्रकाश हिन्दुस्तानी' है।

3) 'षट्ऋतु' में कवि ने छ' ऋतुओं के अन्तर्गत जीव का परमात्मा के प्रति विरह-जन्य पीड़ा को दर्शाया है।

4) 'कलस गुजराती' में कवि की दार्शनिक विचारधारा की अभिव्यक्ति हुई है। 'कलस हिन्दुस्तानी' इसी का हिन्दी अनुवाद है।

5) 'सनंध' के द्वारा कवि ने इस्लाम धर्म ग्रन्थ 'कुरान' के महत्व को समझाकर तत्कालीन समाज में इस्लाम धर्म के नाम पर पलने वाली बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया है।

6) 'किरंतन' में कवि ने मन की निर्मलता, आत्म-जागृति आदि विविध विषयों के सम्बन्ध में अपने विचार को अभिव्यक्ति दी है।

7) 'खुलासा' में कवि ने 'कुरान' के कुछ अध्यायों का स्पष्टकीरण कर इस्लाम-धर्म को व्यापकता प्रदान किया है और संसार के विविध धर्मों में समानता स्थापित करने पर जोर दिया है।

8) 'खिलवत' में आत्मा-परमात्मा के संवाद के माध्यम से संसार की असारता और ईश्वर की सारता का प्रतिपादन किया गया है।

9) 'परिक्रमा' परमात्मा के निवासस्थान परमधाम का विस्तृत परिचय देता है।

10) 'सागर' में उल्लिखित आठ सागरों में कवि ने परमब्रह्म परमात्मा के विभिन्न स्वरूपों और गुणों को दर्शाया है।

11) 'सिनगार' ग्रन्थ ईश्वर के विविध अंगों के साज-सज्जा को दर्शाता है।

12) 'सिन्धी' ग्रन्थ के चार उपभागों में कवि का परमात्मा के प्रति प्रेम और विरह भाव प्रकट हुआ है।

13) 'मारुत सागर' में कवि ने आत्मा की मुक्तावस्था का परिचय देकर वेद एवं कतेब में समन्वय स्थापित किया है।

14) 'कयामतनामा' दो भागों में विभक्त है - 'कयामतनामा बड़ा' और 'कयामतनामा छोटा'। दोनों ग्रन्थों में कवि ने हिन्दू शास्त्र, पुराण, बौद्ध, इस्लाम आदि विविध धर्मों के ग्रंथों में समन्वय स्थापित कर एक नवीन धार्मिक विचारधारा को प्रस्तुत किया है।

उपर्युक्त प्रमुख ग्रन्थों के अतिरिक्त श्री प्राणनाथजी द्वारा प्रणीत कुछ गद्य लेख एवं स्फुट साहित्य भी है, जिनका संपूर्ण रूप से प्रकाशन अभी तक नहीं हुआ है।

इस शोध आलेख की सार्थकता इस दृष्टि से भी है कि संत महामति प्राणनाथ ने न केवल काव्य-ग्रन्थों की रचना द्वारा तत्कालीन समाज में व्याप्त विषमता को दूर करने का प्रयास किया, अपितु आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने देशी राजाओं को पत्राचार द्वारा उनकी नीतियों में सुधार लाने का सुझाव भी दिया। औरंगजेब जैसे कट्टर मुसलमान शासक की धर्मांध नीति में सहिष्णुता लाने हेतु वे बहुत दिनों तक दिल्ली में रहें, परन्तु औरंगजेब की नीति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया, फिर भी उन्होंने आशा नहीं छोड़ी और पुनः पूरी लगन से देश के विभिन्न राज्यों में 'जागनी' मंत्र प्रचार द्वारा जन-जन को समता के लिए जागृत करने के अभियान में अपने को लगाये रखा। अपनी अचूक वाणी के प्रवचन द्वारा उन्होंने हिन्दू आर मुसलमान दोनों जातियों को प्रभावित किया, परिणामस्वरूप दोनों वर्ग के लोगों ने इनकी शिष्यता ग्रहण की। इनके अनुयायी 'सुन्दर-साथ' कहलाये और उन्हीं के द्वारा उन्हें 'प्राणनाथ' की उपाधि भी प्राप्त हुई। अपने ग्रन्थों का उन्होंने विविध भाषाओं में अनुवाद भी कराया ताकि जनसामान्य तक उनका धार्मिक दृष्टिकोण पहुँच सके और एकता व समता के लिए उनमें जागृति आये। उन्हें अपने इस कार्य में काफी हद तक सफलता भी मिली। इस सम्बन्ध में डॉ0 लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय[1] के शब्दों में हम कह सकते हैं, कि 'मध्यकालीन संतों में जन चेतना को झंझोड़ कर जगाने में महामति को सबसे अधिक

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

भारतीय वाङ्गमय में समन्वय की विराट चेष्टा करने वाले महामति प्राणनाथ का जीवन दर्शन

डॉ० सुलक्षणा टोप्पो
डॉ० संध्या कुमारी
ई/३५, जीनिया,
आशियाना गार्डेन्स सोनारी,
जमशेदपुर, झारखण्ड

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

सफलता मिली'। श्रीमती विमला मेहता[2] के अनुसार 'औरंगजेब और उस समय के मुसलमानों को उनके धर्म का शुद्ध स्वरूप समझाकर उन्हें भारतीय संस्कृति की धारा में लाने का उन्होंने अथक प्रयास किया'। अपने समय के विभिन्न सम्प्रदायों के पण्डितों को शास्त्रार्थ में पराजित कर उन्होंने 'निजानंद सम्प्रदाय' की श्रेष्ठता सिद्ध की और 'निष्कलंक बुद्ध' की उपाधि अर्जित की। इतना ही नहीं कबीर पंथी संत चिन्तामणि को भी शास्त्रार्थ में पराजित कर उसे अपना शिष्य बनाया। इस तरह सुधार कार्य में निरन्तर लीन रहकर इन्होंने 1694 ई0 में पन्ना में अपने सांसारिक जीवन का परित्याग कर परमधाम गमन किया। आज भी पन्ना में स्थित उनका अन्तिम लीला स्थल 'मुक्तिपीठ पद्मावतीपुरी' के नाम से विख्यात है। उनके द्वारा प्रणीत 'कुलजम स्वरूप' आज भी प्रणामी मन्दिरों में पूजनीय बना हुआ है।

महामति प्राणनाथ की प्रसिद्धि का मुख्य कारण उनका समन्वयात्मक दार्शनिक विचार है। वैसे तो सभी युगों में कवियों ने जीवन दर्शन के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं, परन्तु दर्शन की जो आभा इस संत में दिखाई पड़ती है, वैसी शायद ही किसी युग के किसी कवि में रहो होगी। दार्शनिक मान्यताओं में उन्होंने ब्रह्म, जीव, जगत, माया, मुक्ति आदि के सम्बन्ध में अपना विचार व्यक्त किया है। ऐसा माना जाता है कि प्राणनाथ को परमतत्व का ज्ञान अपने गुरू 'देवचन्द्र' जी से ही प्राप्त हुआ। 'गुरू द्वारा प्राप्त ज्ञान को उन्होंने स्वानुभूति की कसौटी पर कसा और उसका विस्तार किया। किसी भी धार्मिक मत के तार्किक तथा दार्शनिक मतवाद को उन्होंने प्रधानता नहीं दी।'[3] 'तारतम सागर' अथवा 'कुलजम स्वरूप' इनके परमधाम दर्शन की कुंजी है, जिसमें उन्होंने अनादि, अखंड, पूर्णब्रह्म परमात्मा के साक्षात स्वरूप का विशुद्ध वर्णन चारों वेदों के सार रूप में किया है। ब्रह्म के स्वरूप वर्णन में इन्होंने ब्रह्म के तीन भेद बतायें हैं :-

1. अक्षरातीत 2. अक्षर 3. क्षर

इनमे से अक्षरातीत ब्रह्म ही उनके उपास्य है, जो पूर्ण ब्रह्म स्वरूप हैं। 'किरंतन' में उन्होंने स्पष्ट कहा है :-

'मेरे जो जीउ पीउ धाम के,
ए जो अक्षरातीत अखण्ड।'

उनका यही अक्षरातीत ब्रह्म स्वलीलाद्वैत और विराट् रूप धारण करने वाले श्रीकृष्ण हैं, जिन्होंने ब्रज, रास, मथुरा और द्वारिका लीला द्वारा सम्पूर्ण संसार को अपने स्वरूप और शक्ति का परिचय दिया। उनका यह ब्रह्म अखण्ड, अनन्त, अविनाशी और सर्वशक्ति सम्पन्न है। उन्होंने स्पष्ट कहा है :-

'केवल ब्रह्म अक्षरातीत, सत् चिद आनन्द ब्रह्म।
ए कह्यो मोहे नेहेच कर, इन आनन्द में हम तुम।।'

महामति जी की दृष्टि में अक्षर ब्रह्म पूर्ण अक्षरातीत ब्रह्म का सत् अंश है। इसी अक्षर ब्रह्म से माया का विनाश होता है। क्षर ब्रह्म प्रलयकाल में नष्ट होने वाला, असत्, जड़ और दुःखों से युक्त है। 'महामति जी ने इसे, 'विराट-पुरुष' की संज्ञा दी है।'[4] ब्रह्म को पहचानने के लिए महामति जी ने आत्मज्ञान को आवश्यक माना है। इस प्रकार उनका ब्रह्म क्षर-अक्षर से परे अक्षरातीत श्री-कृष्ण हैं, जो प्रकृति के कण-कण में विराजमान है।

आत्मा के सम्बन्ध में महामति जी की धारणा है कि आत्मा-परमात्मा में कोई भेद नहीं है। परमात्मा के अंग की ज्योतिर्मय शक्ति ही आत्मा है। परमात्मा की तरह आत्मा भी उनकी दृष्टि में नित्य, मुक्त, अजर, अमर है। आत्मा के भी उन्होंने तीन रूप बताये हैं :-

1. ब्रह्मात्मा 2. ईश्वरात्मा 3. जीवात्मा

'शास्त्रों तीनों सृष्टि कही, जीव ईश्वरी ब्रह्म'
तिनके ठौर जुदे-जुदे, ए देखियो अनुकरम।'

ब्रह्मात्मा को उन्होंने पूर्ण ब्रह्म का स्वरूप माना है, जो सांसारिक खेल देखने इस नश्वर संसार में अवतरित होती है। 'संसार में प्रकट होने के कारण ही इन अंगनाओं को ब्रह्म सृष्टि कहा गया है ।'[5] ईश्वरीय आत्मा अक्षर ब्रह्म के नूर से उत्पन्न उनकी सखियाँ हैं, जो माया से अप्रभावित रहकर संसार में जन्म लेती हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

भारतीय वाङ्गमय में समन्वय की विराट चेष्टा करने वाले महामति प्राणनाथ का जीवन दर्शन

डॉ० सुलक्षणा टोप्पो
डॉ० संध्या कुमारी
ई/३५, जीनिया,
आशियाना गार्डेन्स सोनारी,
जमशेदपुर, झारखण्ड

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

माया से अप्रभावित रहने के कारण इन्हें जागृत आत्मायें कहा गया है। स्वामी जी की दृष्टि में जीवात्मा अक्षर ब्रह्म का स्वप्न मात्र है, जो नाशवान है। उन्होंने जीवात्मा, के तीन भेद बतायें है :- उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ। इसमें से प्रथम भक्ति-नीति का पालन कर बैकुण्ठ अधिकारी होती है। द्वितीय सकाम वृति से ईश्वर की उपासना करता है, इसलिए वे सांसारिक जीवन-मरण के चक्कर में फँसी रह जाती है। अन्तिम प्रकार के जीव पाप कर्मों में लिप्त रहकर चौरासी लाख योनियों में भटकते रहते हैं। महामतिजी का मानना है कि यह समस्त जगत सत्, रज और तम तीन गुणों से उत्पन्न हुआ है। इसमें प्रकट जीव-सृष्टि इन तीनों निहित गुणों के अनुसार आचरण कर रही है। अत: इनके आचरण में भिन्नता है :-

'त्रिगुण से पैदा हुई, ए जो सकल जहान।
सो खेले तीनों गुण लिए, नाहीं एक दूजे समान।।

महामति जी की दृष्टि में जगत नश्वर और क्षणभंगुर है। इसकी रचना पूर्णब्रह्म की इच्छा से होती है। अन्यथा यह नाशवान है। 'सुपन की सृष्ट बैराट सुपन का।'[6] अर्थात् नींद में स्वप्न की तरह सृष्टि की रचना और शून्य से विराट विश्व की उत्पति हुई है। मध्यकालीन संतों एवं भक्तों की तरह स्वामी प्राणनाथजी ने भी माया को आत्मा-परमात्मा में भेद कराने वाली शक्ति माना है। माया के भी उन्होंने तीन भेद बतायें हैं :- 1. प्रकृत माया 2. योग माया 3. कालमाया। इनमें से कालमाया संसार में सबसे अधिक प्रभाव डालती है। संसार और सांसारिक सभी प्रपंच इसी माया के कारण उत्पन्न होते हैं। प्रकृत माया पूर्ण-ब्रह्म की इच्छा शक्ति है और योगमाया अक्षर ब्रह्म की ऐश्वर्य शक्ति है, जिससे रास मण्डल की रचना हुई है। माया से मुक्ति पाने के लिए महामति जी ने सत्गुरू की शरण में जाने और उनके द्वारा प्रतिपादित मार्ग पर चलने का उपदेश दिया है :-

'अब संग कीजे तिन गुरू की, खोज के पुरुष पूरन।
सेवा कीजे अब अंगसो, मन करम वचन।'

इसके अतिरिक्त महामति जी ने अपने दार्शनिक सिद्धान्तों में कर्म आर मुक्ति पर भी चर्चा की है। उनका तो स्पष्ट कहना है :-

'तीरथ ते जे एक चित्त कीजे, कर्म न बांधिए कोए।
अहिनिस प्रीते सूँ रमिए, तीरथ ऐनी पेरे होए।।

उनका कहना है कि संसार की असारता और नश्वरता का पता चलते ही जीव की अज्ञानता दूर हो जाती है। कर्मों का प्रभाव शान्त हो जाता है और आत्मा-जीवन मरण के चक्कर से मुक्त होकर परमतत्व में विलीन हो जाती है। अत: प्रेमाभक्ति ही उनके दर्शन का आधार है।

भारत अनेक भाषाओं, धर्मावलम्बियों एवं संस्कृतियों का देश रहा है। विश्व के अन्य अनेक देशों में जहाँ एक ही धर्म, संस्कृति और भाषा को मान्यता देकर अन्य सभी धर्मों के प्रति उपेक्षा का भाव रखा जाता है, वहाँ भारत में सभी धर्म सम्प्रदायों को फलने-फूलने का अधिकार प्राप्त है। इसलिए यहाँ के अधिकांश विचारकों एवं धार्मिक मनीषियों ने विविध धर्मों में मान्य देवी-देवताओं को एक ही परमात्मा का विविध रूप बताते हुए उनमें सामंजस्य स्थापित कर विविधता के कारण होने वाले विद्वेष को कम करने का प्रयास किया है। इन्हीं सन्तों और विचारकों में महामति प्राणनाथ भी हैं, जिन्होंने अपनी सुदूर दृष्टि से अपने समय के धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक वैमनस्य को पाटकर, उनमें समता स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास किया है। महामति के समय में मूल विषमता धार्मिक विविधता के कारण बनी हुई थी। देश की राजनीति औरंगजेब के क्रूर हाथों में चले जाने के कारण इस्लाम धर्म का देश में बोलबाला था, जिसे गैर मुस्लिम धर्मावलम्बी हीन दृष्टि से देखते थे तथा उसके प्रति उपेक्षा का भाव मन में रखते थे। मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग भी गैर मुस्लिम वर्ग से जोर-जबरदस्ती कर इस्लाम धर्म कबूल करवा रहे थे। इससे तत्कालीन समाज विषमता के गर्त में धंसता चला जा रहा था। ऐसे परिवेश को देखकर महामति मर्माहत हो गये थे। औरंगजेब की शक्ति के सामने अन्य सभी देशी नरेश नतमस्तक हो चुके थे। इस संकट भरे परिवेश से भारतीय संस्कृति को उबारने का बीड़ा महामति प्राणनाथ ने उठाया। उन्होंने जाति-पाँति, धर्म, संस्कृति, राजनीति आधार पर ही नहीं, भाषा के आधार पर भी देश में समन्वय लाने का प्रयास किया। वे स्वयं गुजरात के थे, जहाँ की मूल भाषा गुजराती मानी जाती है। महामति जब

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

भारतीय वाङ्गमय में समन्वय की विराट चेष्टा करने वाले महामति प्राणनाथ का जीवन दर्शन

डॉ० सुलक्षणा टोप्पो
डॉ० संध्या कुमारी
ई/३५, जीनिया,
आशियाना गार्डेन्स सोनारी,
जमशेदपुर, झारखण्ड

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

तक गुजरात में रहें, अपने उपदेशों और वाणियों को गुजराती भाषा में ही कहते रहे, लेकिन जब वे गुजरात के बाहर धर्म प्रचार हेतु निकले, तब उन्होंने देखा कि देश की अधिकांश जनता हिन्दी समझती तथा बोलती है। इसलिए उन्होंने अपना उपदेश हिन्दुस्तानी भाषा में देना आरम्भ किया, क्योंकि वे यह समझ चुके थे कि देश से कटुता समाप्त करने हेतु यह आवश्यक है कि लोकभाषा को अपनाकर लोगों को समन्वय की राह पर अग्रसर किया जाए। इतना ही नहीं, उन्होंने हिन्दुस्तानी भाषा को ही सबसे सरल और सुगम बताते हुए सबसे पवित्र भाषा की संज्ञा से विभूषित भी किया –

बड़ी भाखा ये ही भली, जो सबमें जाहिर।
करके पाक सबन को, अन्तर माहें बाहेर।।

श्री सनंध – 11/16

महामति यह जानते थे कि हिन्दी भाषा ही हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, जैन सभी को मिलाने वाली सम्पर्क भाषा हो सकती है, क्योंकि तत्कालीन भारत की यही राष्ट्र भाषा मानी जाती थी तथा अति सरल होने के कारण सभी लोग इसे आसानी से समझ लेते हैं। महामति अपनी वाणी में अपनी इसी भाषा संबंधी आदर्श को प्रस्तुत करते हुए कहते हैं –

सबको प्यारी अपनी, जो है कुलकी भाख।
मैं कहूँ भाखा किनकी, या मैं तो भाखा कै लाख।।
बिना हिसाबे बोलियाँ, मिने सकल जहान।
सबसे सुगम जान के, कहूँगी हिन्दूस्तान।।

श्री सनंध – 1/14,15

महामति वाणी – ''कुलजब स्वरूप'' का अध्ययन करने पर यह पता चलता है कि उन्होंने हिन्दी को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम अवश्य बनाया है, जिसमें उर्दू, अरबी, फारसी, सिंधी, गुजराती आदि भाषा के शब्द प्रयुक्त हुए हैं, लेकिन सभी की लिपि को उन्होंने देवनागरी ही रखा है। इससे यह विदित होता है कि वे सभी भाषा के प्रति सम्मान का भाव रखते थे, लेकिन देश की राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी को ही प्रधानता देते थे। यह उनके राष्ट्रभाषा प्रेम के भाव को दर्शाता है। इसके साथ-साथ भाषा समन्वय के उनके प्रयास को भी रेखांकित करता है। ''कुलजम स्वरूप'' के कई प्रकरणों में उनका भाषा समन्वय संबंधी विचार व्यक्त हुआ है। भाषा को ही उन्होंने जाति, धर्म, शास्त्र, परमात्मा आदि के भेद का मूल कारण माना है। उनका तो स्पष्ट कहना है –

जुदे जुदे नामे गावही, जुदे जुदे भेष अनेक।
जिन कोई झगड़ों आप में, धनी सबों का एक।।

श्री सनंध – 41/72

भेष भाषा जाते जुदिया, न तो साई दम सोई देह।
खेंचा खेंच कर हुकमे, खेल बनाया एह।।

श्री सनंध – 38/14

तत्कालीन समय में संस्कृत ज्ञाता पंडित को ही विद्वान माना जाता था। संस्कृत भाषा में ही परमात्मा संबंधो बातों को लोगों को बताया जाता था, जिसे साधारण जनता भली प्रकार से नहीं समझ सकती थी। इसका लाभ उठाकर तथाकथित विद्वान परमात्मा के संबंध में अपनी मनगढ़न्त विचार बताकर जनता को बड़ी सहजता से गुमराह कर देते थे। साधारण जनसमाज संस्कृत को भली प्रकार से नहों समझ सकता है, इस बात से महामति पूर्णत: अवगत थे। इसलिए वे साधारण जनसमाज को समझाते हुए कहते हैं कि जिसका नाम 'देवभाषा संस्कृत' है, उसे तो मात्राओं के जोड़-घटाव द्वारा संशय और भ्रम उत्पन्न करने वाली भाषा ढोंगी एवं अज्ञानी पंडितों ने बना दिया है। व स्वयं तो इस भाषा का शुद्ध ज्ञान नहीं रखते हैं, इसके साथ-साथ लोगों को इस भाषा के ज्ञानाभाव के कारण, शास्त्रों का गलत शब्दार्थ बताकर उन्हें रूढ़िवादी बना देते हैं। महामति का कहना है कि सीधी और सरल भाषा हिन्दुस्तानी है, जिसे हर कोई आसानी से समझ सकता है, लेकिन तथाकथित विद्वान इसे नहीं अपनाते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि इसमें उनकी मनमानी नहीं चलेगी। इसलिए वे संस्कृत भाषा का सहारा

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

डॉ० सुलक्षणा टोप्पो
डॉ० संध्या कुमारी
ई/३५, जीनिया,
आशियाना गार्डेन्स सोनारी,
जमशेदपुर, झारखण्ड

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

लेकर लोगों में विद्वेष पैदा करते हैं। इस प्रकार महामति लोगों को भाषा-भेद से ऊपर उठकर धर्म के मूल अर्थ समझने हेतु प्ररित करते हैं -

जाको नामैं संस्कृत, सो तो संसे ही की क्रंत।
सो हरफ दृढ़ क्यों होवही, जो एती तरफ फिरत।।
सीधी इन भाषा मिने, माएने पाईए जित।
जो शब्द सब समझही, सो पकड़े नहीं पंडित।।

श्री सनंध - 17/13,18

जैसे-जैसे महामति जनसम्पर्क से जुड़ते गये, उनकी भाषा सरल से सरलतर होती चली गयी। उनकी भाषा में कच्छी, गुजराती, सिंधी, संस्कृत, अरबी आदि शब्दों की भरमार होती गयी, लेकिन उसमें क्लिष्टता कहीं नहीं आयी। उसका स्वरूप निरन्तर सरल ही होता गया। इसका मूल कारण दर्शाते हुए डॉ0 रणजीत साहा[7] ने कहा है कि ''महामति लोगों की जुबान में अपने मन की बात समझाने आये थे और उन्होंने पाया कि केवल हिन्दुस्तानी भाषा ही इस दृष्टि से उनकी सहायता कर सकती है। ''इसलिए विविध भाषा के शब्दों से युक्त सरल हिन्दी को उन्होंने अपनी वाणी का माध्यम बनाया। महामति को जागनी अभियान के दौरान अनेक बार तत्कालीन पंडितों और तथाकथित मुस्लिम फकीरों से शास्त्रार्थ करना पड़ा था, जिससे उन्हें यह ज्ञात हो गया था कि लोग मात्राओं और बाह्य अर्थ को लेकर परस्पर विवाद करते हैं। मूल अर्थ से सभी अनभिज्ञ है। इसलिए महामति हिन्दुओं को हिन्दू धर्म में मान्य वेद, भागवत, गीता आदि शास्त्र के अनुसार तथा मुस्लिम को इस्लाम धर्म के मान्य ग्रंथ 'कुरान' के अनुसार ही धर्म का मूल स्वरूप बताते हैं, जिससे उनके मन से धर्म के नाम पर, भाषा भेद के कारण पल रही भ्रान्तियाँ समाप्त हो जाए और उनमें समन्वय स्थापित हो सके -

मुस्लिम को मुस्लिम की, हिन्दुओं हिन्दुओं की तर।
ए समझे सब अपने मिने, जब आए इमाम आखर।।

श्री सनंध - 32/20

अत: कहा जा सकता है कि महामति समन्वय को ध्यान में रखकर ही हिन्दुस्तानी भाषा को प्राथमिकता प्रदान करते हैं। 'कुलजम स्वरूप' के कई प्रकरणों मं उन्होंने सिंधी (सनंध सिंधी की) भाषा के अपने उपदेश को देवनागरी लिपि से बद्ध किया है, तो कई प्रकरणों में 'अरबी' (सनंध अरबी भाषा) भाषा में उपदेश दिया है। उनकी वाणी में अन्य भाषा शब्दों की अपेक्षा अरबी-फारसी शब्दों की बहुलता है, जो उनके हिन्दू-मुस्लिम समन्वय भाव को दर्शाती है। तत्कालीन समय में मूल विषमता हिन्दू और मुसलमान सम्प्रदाय में थी, जिसमें समता लाने के लिए महामति हर संभव प्रयास कर रहे थे। यद्यपि उनकी मातृभाषा गुजराती थी, जिसके प्रति वे पर्याप्त संवेदनशील भी थे, लेकिन फिर भी वे हिन्दुस्तानी को ही सबसे ऊपर और श्रेष्ठ भाषा बताते हैं, क्योंकि उनकी दृष्टि में सही अर्थों में यही राष्ट्र की भाषा होने की अधिकारी है। भारत जैसे विविध भाषा क्षेत्र के लोगों को एक-दूसरे से जोड़ने वाली सम्पर्क भाषा भी यही है, जिसे हर जाति-सम्प्रदाय के लोग आसानी से समझ सकते हैं। उनका यही भाषा प्रेम उनके राष्ट्र प्रेम, समर्पण और स्वाभिमान के भाव को दर्शाता है, उनके समन्वयकारी रूप एवं लोकरंजक स्वरूप को उजागर करता है।

महामति का सर्वधर्म समन्वय का प्रयास अतीव प्रशंसनीय है। सर्वधर्म समन्वय के लिए कही गयी उनकी प्रत्येक वाणी, वाणी का प्रत्येक शब्द, हृदय को स्पर्श ही नहीं करता है, बल्कि मानव मस्तिष्क को भी झकझोर कर रख देता है। मानव यह सोचने और समझने पर विवश हो जाता है कि जाति, धर्म, भाषा-भेद से ऊपर मानव का जीवन अमूल्य है, जिसके द्वारा वह आत्मा-परमात्मा के मूल स्वरूप से अवगत होकर इस संसार के भ्रमित जाल से, जीवन के आवागमन चक्र से सदा के लिए मुक्त हो सकता है। सृष्टि के सभी जीवों में श्रेष्ठतम माना जाने वाला मानव, महामति के उपदेशों से प्रभावित होकर, एक परमात्मा के शरणागत होकर विषमता, विद्वेष और कलह से दूर शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकता है।

महामति ने वेदों और पुराणों के साथ कुरान और हदीसों का समन्वय कर धर्म का केन्द्र बिन्दु मानव को बताया। उनका मानना है कि सभी धर्म, सम्प्रदाय और सिद्धान्त मनुष्य की गरिमा को बनाये रखने के लिए बने हैं। उन्हें

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

भारतीय वाङ्गमय में समन्वय की विराट चेष्टा करने वाले महामति प्राणनाथ का जीवन दर्शन

डॉ० सुलक्षणा टोप्पो
डॉ० संध्या कुमारी
ई/३५, जीनिया,
आशियाना गार्डेन्स सोनारी,
जमशेदपुर, झारखण्ड

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

आधार बनाकर जाति, धर्म, वर्ग, वर्ण भेद की खाई को बनाना, मनुष्य की गरिमा को कम करना है। अतः इन सबसे ऊपर उठकर, एक परमात्मा की संतान सदृश सभी मानव समुदाय का मिलकर रहना ही मानव की श्रेष्ठता की पहचान है। यही उनकी वाणी का मूल उपदेश है, जिसे उन्होंने अपने वाणी ग्रंथ 'कुलजम स्वरूप' में विविध प्रकार से बार-बार दोहराया है -

जुदे-जुदे नामें गावहीं, जुदे-जुदे भेष अनेक।
जिन कोई झगड़ों आप में, धनी सबों का एक।।

श्री सनंध - 41/72

खसम एक सबन का, नाहीं दूसरा कोए।
ए विचार वो करे, जो आप साँचे होए।।

श्री कलष हिन्दी - 14/34

सब जाते नाम जुदे धारे, पर सबका खाविंद एक।
सबकी बंदगी याही की, पीछे लड़े पाये बिना विवेक।।

श्री खुलासा - 2/22

सर्वधर्म समन्वय हेतु उन्होंने जाति धर्म के ऊपर उठकर आत्मतत्व को पहचानने का उपदेश दिया है, जो सभी जीवों में समान रूप से स्थित है, जिसमें साक्षात् परमेश्वर का निवास ह। इस आत्मतत्व को पहचानते ही मानव का आपसी सारा भेद, सारा वैमनस्य समाप्त हो जायेगा। महामति के मतानुसार धर्म का दूसरा नाम ही आत्म जागृति एवं मन की पवित्रता है। इसी के द्वारा मानव का अभिमान और भेद समाप्त हो सकता है और वह परस्पर सौहार्द्र के साथ एक परमात्मा की उपासना कर सकता है -

जात भेष ऊपर के, एक सब छल की जहान।
जो न्यारा माहें बाहेर से, तुम तासो करो पहचान।।
खाए पिए सब मिलके, बंदगी एक खसम।
नाम न्यारे सब टल गए, हुई नई एक रसम।।
जात पात न भांत कोई, एक खान-पान एक गान।।

श्री सनंध - 29/5, 36/19, 27/24

परमात्मा का स्वरूप दर्शाने वाले विविध सम्प्रदाय के धर्म ग्रंथों को उन्होंने एक ही परमात्मा का स्वरूप वर्णन करने वाला ग्रंथ बताया, जिसमें भेद, भाषा के कारण बना हुआ है। वेद-कतेब के मूल कथानकों में उन्होंने साम्यता दर्शाया तथा मूल पुरुषों में भी एकता स्थापित किया। वेद-कतेब में मूल एकता स्थापित करते हुए उन्होंने कहा भी है -

दोऊ कहे वजूद एक है, अरवाह सबों में एक।
वेद कतेब एक बतावहीं, पर पावे न कोई विवेक।।
ताथे हुई बड़ी उरझन, सो सुरझाऊ दोय।
नाम निसान जाहेर करूँ, ज्यों समझे सब कोय।।

श्री खुलासा - 12/41, 44

इस प्रकार अपने समन्वयवादी दृष्टिकोण के आधार पर महामति ने धर्म, जाति, वेश-भूषा, भाषा, देश, समाज आदि में एकता स्थापित किया। धर्म के वास्तविक रहस्य और अध्यात्म पक्ष को उजागर कर लोगों के मन में व्याप्त भ्रम को समाप्त किया -

दोनों जहान में थी उरझन, करम कांड सरियत चलन।
करी हकीकत मारुत रोसन, साफ किये आसमान धरन।।

श्री कियामतनामा बड़ा - 1/32

महामति के हृदयासन में परमात्मा स्वरूप सद्गुरू के आगमन का मूल उद्देश्य ही संसार में तीन मूल कार्य को करना था, जिसका स्पष्ट उल्लेख करते हुए वे कहते हैं -

SHODH SANCHAYAN

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

डॉ० सुलक्षणा टोप्पो
डॉ० संध्या कुमारी
ई/३५, जीनिया,
आशियाना गार्डेन्स सोनारी,
जमशेदपुर, झारखण्ड

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

साहेब आए इन जिमि, कारज करने तीन।
सबका झगड़ा मेट के, या दुनिया या दीन।।

श्री खुलासा - 13/89

अत: यह कहा जा सकता है कि महामति ने धर्म को धर्म के रूप में ही निरखा-परखा। उनके लिए सनातन हिन्दू धर्म, इस्लाम, ईसाई, सिक्ख, जैन आदि विशेषण या नाम कोई महत्व नहीं था। उन्होंने सभी धर्म के समन्वय द्वारा एक ऐसे मार्ग का निर्माण किया, जिस पर सभी धर्मावलंबी चल सके। सभी सम्प्रदाय के लोगों को उन्होंने समता का, मानवता का पाठ पढ़ाया तथा सभी धर्मावलंबियों के लिए विश्व धर्म का मंच तैयार किया, जो जाति भेद से बहुत ऊपर था। इस संबंध में डॉ0 लक्ष्मी नारायण दुबे का कहना समीचीन प्रतीत होता है। वे[8] लिखते हैं कि ''प्राणनाथ का सर्वधर्म समन्वय सचमुच में सर्व-धर्म सामंजस्य था। वह सिर्फ दो धर्मों के समन्वय तक ही सीमित परिमित नहीं रह गया, वरन् अपने मानव-प्रेम, मानव भ्रातृत्व तथा मानव ममत्व की व्यापक, विशाल, विस्तीर्ण सीमाओं में हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, पारसी आदि अनेक विश्व धर्मों को समेटता और समाविष्ट करता है। ''अत: महामति का जीवन-दर्शन समाज अथवा राष्ट्र के लिए ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के मानवता के लिए अनमोल वरदान तथा सर्वोत्तम उपहार है, जिसकी प्रासंगिकता हमेशा बनी रहेगी।

महामति का वाणी साहित्य 'कुलजम स्वरूप' उनकी आत्मिक वाणी है, जिसकी रचना उन्होंने अपने आत्मिक अनुभव की कसौटी पर किया है। इस ग्रंथ का एक-एक पद महामति की आत्मा की पुकार है, जिसमें कहीं उनका परमात्मा प्रेम प्रस्फुटित हुआ है, तो कहीं परमात्मा के प्रति उनकी आत्मा का विरहोद्गार अंकित है। इसमें कहीं वे समाज को सर्वधर्म समन्वय की राह पर अग्रसारित करते दिखाई पड़ते हैं तो कहीं लोगों को एक परमात्मा के स्वरूप से अवगत कराते हैं। कहीं समाज सुधार का उनका प्रयास परिलक्षित होता है तो कहीं देश भक्ति की भावना से ओतप्रोत उनकी वाणी का दर्शन होता है। इस तरह अनेकानेक भाव उनकी वाणी सागर में निहित है। अत: कहा जा सकता है कि उनकी वाणी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों को उजागर करने वाली वह रचना है, जिसमें तत्कालीन समाज की सच्चाईयों को युगीन आकांक्षाओं के साथ अंकित किया गया है।

उनकी दार्शनिक भावना में परमात्मा, आत्मा, जीव, जगत और माया के जिस स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है, वह अपने-आप में अनूठा है। क्षर, अक्षर और अक्षरातीत ब्रह्म की सत्ता को क्रमश: एक-दूसरे से न केवल उन्होंने संबंधित बताया है, बल्कि इसे कुरान के ला, इलाह और इल्लल्लाह तथा वेद के क्षर, अक्षर और उत्तम पुरुष का ही पर्याय बताकर सभी धर्मों में एक ही परमात्मा के स्वरूप से लोगों को अवगत करवाया, जिसमें भेद, भाषा के कारण लोगों ने मान लिया है। आत्मा के तीन स्वरूपों की व्याख्या भी उन्होंने नवीन ढंग से करते हुए उसके अलग-अलग धामों में पहुँचने का उल्लेख किया। माया को परमात्मा की शक्ति और जगत को माया की सृष्टि कहा है।

महामति द्वारा धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं भाषिक एकीकरण के प्रयास में उनकी देशभक्ति की भावना परिलक्षित होती है। सर्वधर्म समन्वय के द्वारा वे देश को एकता के सूत्र में पिरोना चाहते थे, जहाँ किसी प्रकार का कोई भेद भाव नहीं हो तथा हर वर्ग और सम्प्रदाय के लोग जिसमें शांति, स्नेह और समता से जीवन यापन कर सके। इस प्रकार वे देश को विषमता की खाई से निकालकर एक सुरक्षित देश में परिणत कर देना चाहते थे। महामति सामाजिक समता और धार्मिक एकता का आधार मानव की निर्मल एवं स्वार्थ रहित मन को मानते हैं। उनका स्पष्ट कहना है -

एक दीन तब होवही, जब साफ होवे दिल।
ए हक बिना न होवही, जो चौदे तबक आवे मिल।।

श्री कयामतनामा छोटा - 2/24

दश को सुरक्षित कर देना ही उनका लक्ष्य नहीं था, बल्कि वे तो देश के एक-एक व्यक्ति को पूर्णत: सुरक्षित रखना चाहते थे। उनकी यह इच्छा थी कि हर व्यक्ति ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट, धर्म-जाति भेद से ऊपर उठकर परमात्मा के शरणागत हो एवं समाज, परिवार, तथा व्यक्ति के समक्ष शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने का मार्ग प्रशस्त हो और पुन: कभी भी देश में जाति, धर्म के नाम पर पारस्परिक कलह नहीं पनपे। अपने इसी

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

भारतीय वाङ्गमय में समन्वय की विराट चेष्टा करने वाले महामति प्राणनाथ का जीवन दर्शन

डॉ० सुलक्षणा टोप्पो
डॉ० संध्या कुमारी
ई/३५, जीनिया,
आशियाना गार्डेन्स सोनारी,
जमशेदपुर, झारखण्ड

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

उद्देश्य को पूरा करने के लिए उन्होंने जागनी अभियान चलाया, जिसके द्वारा व्यक्ति की सुप्त, सांसारिक मोह-वासना में रत आत्मा को झकझोर कर जगाया गया तथा उन्हें आध्यात्मिक पथ पर जाने के लिए प्रेरित किया गया, वह भी सांसारिक कर्म में रहकर। महामति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व तथा कृतित्व ही उनके जागनी अभियान के संकल्प को पूरा करता दिखाई पड़ता है। उनका कहना है कि जागनी 'आत्म-जागृति' ही व्यक्ति के जीवन को एक उद्देश्य प्रदान कर सकता है और जीवात्माओं को उसके मानव देह धारण करने की सार्थकता से अवगत करा सकता है। परमात्मा द्वारा मानव को जीवन प्रदान करने में भी परमात्मा का यही आदेश (आत्म-जागृति) निहित है, जिसपर चलकर जीव की लौकिक ही नहीं, पारलौकिक यात्रा भी 'परमात्मा मिलने से' सफल होती है। यही वह आधार है, जिसके द्वारा जीव आवागमन के चक्र से मुक्त हो सकता है।

अत: कहा जा सकता है कि उत्तर मध्यकालीन भारत की अंध रात्रि में प्रकाश का दीप लेकर महामति प्राणनाथ का अवतरण हुआ, जिन्होंने अपनी ओजस्वी वाणियों और सनातन समन्वित धर्म का उपदेश देकर जन-जन के प्राणों में मुक्ति का मंत्र प्रस्फुटित किया। उन्होंने मानव जाति की एकता का ऐसा शंख फूंका, जिससे एक ही हक और हकीकत की आवाज दुनियाँ में गूँजने लगी। एक महान उपदेशक के रूप में अवतरित होकर उन्होंने धार्मिक समन्वय एवं विश्व मैत्री का पथ प्रशस्त किया। अपनी निर्भीक वाणी के उद्घोष द्वारा परमात्मा के एक स्वरूप को दर्शाया तथा लोगों को धार्मिक वाद-विवादों, विरोधी-अवरोधी, मिथ्याचारों और झूठी विडम्बनाओं से दूर रहने का उपदेश दिया। मानव जाति एवं धर्म के उत्थान के लिए उन्होंने अपने जीवन को जन-जीवन की गंगा में एकाकार कर दिया। महामति प्राणनाथ का कहना है - जब तक मानव अपना अहंकार नहीं छोड़ेगा, तब तक अखंड सुख का आनंद उसे नहीं मिलेगा। इसलिए जहाँ उनकी वाणी में मुसलमानों को गुदड़ी, माला, कमंडल जैसे कर्मकांड में फंसाने वाली चीजों को छोड़ने का उपदेश है, वहीं हिन्दुओं को जनेऊ, माला, तिलक आदि बाह्याडम्बर और लोभ, मोह को त्यागने का निर्देश भी अंकित है-

जो लो कछुए आपा रखे, तो लो सुख अखंड न चखे।
तबसी गोदड़ी करवा, छोड़ो जनेऊ हिरस हवा।।

श्री कयामतनामा बड़ा 8/17

देश को धार्मिक विषमता को समाप्त करने के लिए परमात्मा की एकता आवश्यक है। परमात्मा की एकता के गुणगान से सारा 'कुलजम स्वरूप' भरा हुआ है, जिसे महामति हर मानव को समझाते हैं -

कलाम अल्ला या हदीसे, शास्त्र पुराण या वेद।
सो सब सुख लेवे मोमिन, हक रसना के भेद।।

श्री सिनगार - 17/19

तत्कालीन वातावरण में प्रचलित विश्व की विभिन्न धार्मिक आस्थाओं और अवधारणाओं को उन्होंने अपनी प्रखर बुद्धि एवं पारदर्शी समझ द्वारा, समान धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया। सभी धर्मों को सम्मान देते हुए उन्होंने मानवीय संवेदना को शीर्षस्थ स्थान दिया, जिसका मूल लक्ष्य देश हित तथा शांति की स्थापना था। सगुण भक्ति के अन्तर्गत कृष्ण एवं राम भक्ति धारा तथा निर्गुण भक्ति के अन्तर्गत संत एवं सूफी काव्य धारा के मूलतत्वों का समाहार प्रणामी धर्म में कर भक्ति काल में प्रचलित चारों धाराओं में समन्वय स्थापित कर एक नवीन भक्ति धारा का उन्होंने सूत्रपात किया, जिसे डॉ0 लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने मध्यकाल की पाँचवीं भक्ति धारा की संज्ञा से सम्बोधित किया है। वास्तव में महामति प्राणनाथ ने अपनी पारखी दृष्टि और दूरदर्शिता द्वारा भक्ति की जिस धारा को प्रवाहित किया, उसे मध्यकाल की पाँचवी भक्ति धारा कहा जा सकता है, क्योंकि उसमें भक्ति काल की चारों धाराओं के मूल तत्वों का समाहार ही नहीं, अपितु पर्याप्त अलगाव और वैचारिक वैशिष्ट्य भी मिलता है। भक्तिकाल में प्रचलित भक्ति की चारों धाराओं की सारभूत विशेषताओं को प्रणामी सिद्धान्त में स्थान देते हुए उन्होंने राम-रहीम, कृष्ण-करीम में एकता स्थापित किया। सगुण रूप में अक्षरातीत परमात्मा का स्वरूप वर्णन, निर्गुण रूप में प्रकृति के कण-कण में व्याप्त उनकी सत्ता को दर्शाकर सगुण एवं निर्गुण भक्ति में समन्वय स्थापित किया। एक ओर उन्होंने संतों की तरह समाज सुधार तथा देश उत्थान का प्रयास किया तो दूसरी ओर परमात्मा प्रेम पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने का उपदेश देकर, लोगों को परमात्मा के शरणागत

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

भारतीय वाङ्गमय में समन्वय की विराट चेष्टा करने वाले महामति प्राणनाथ का जीवन दर्शन

डॉ० सुलक्षणा टोप्पो
डॉ० संध्या कुमारी
ई/३५, जीनिया,
आशियाना गार्डेन्स सोनारी,
जमशेदपुर, झारखण्ड

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

होकर समता से रहने का उपदेश भी दिया। इसमें उनकी संत दृष्टि, सूफी प्रेम भावना से समन्वित दिखाई पड़ती है।

हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच फैली भाषायी विषमता को देखकर, उनमें समन्वय स्थापित करने हेतु महामति ने हिन्दी भाषा को मुख्य रूप से अपनी वाणी की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया, जिसमें उर्दू-फारसी, अरबी शब्दों का बहुतायत उपयोग किया गया है। खड़ी बोली हिन्दी में रचित ग्रन्थ 'कुलजम स्वरूप' में उर्दू, फारसी, अरबी भाषा के शब्दों के बहुतायत प्रयोग को देखकर जहाँ हिन्दू धर्म के लोग उनकी वाणी को 'कुलजम स्वरूप' कहते हैं, वहाँ मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग इसे 'कुलजमे शरीफ' कहकर पुकारते हैं। अत: हिन्दी भाषा में अरबी-फारसी शब्दों के प्रयोग द्वारा भी महामति ने दोनों की विषमता को दूर करने का प्रशंसनीय प्रयास किया। भाषायी दृष्टिकोण से एकता स्थापित करने का इतना सफल और सार्थक प्रयास पूर्ववर्ती समाज सुधारकों में शायद ही किसी ने किया हो। आपस में जाति, भाषा, वेशभूषा को लेकर मतभेद करना वे अनुचित समझते हैं और लोगों से आपस में मिलकर रहने का अनुरोध करते हैं, ताकि एक परमात्मा का प्रेम सबको समान रूप से प्राप्त हो सके। अत: कहा जा सकता है कि महामति की वाणी, भाषा भेद की खाई को पाटने में पूर्णत: समर्थ है। उन्होंने तो कहा भी है कि एक ही परमात्मा के हुक्म से इतनी भाषायें, जातियाँ और वेश-भूषा बनी है, अन्यथा सभी में एक ही प्रकार की आत्मा, प्राण और शरीर तत्व (पाँच तत्व) विद्यमान है-

भेष-भाषा जाते जुदिया, ना तो सोई दम सोई देह।
खेंचा खेंच कर हुकमे, खेल बनाया एह।।

श्री सनंध - 38/14

यह कहना समीचीन प्रतीत होता है कि प्रणामी भक्ति धारा में चारों धाराओं - संत काव्य धारा, सूफी काव्य धारा, कृष्ण भक्ति धारा, राम भक्ति धारा के कुछ न कुछ तत्वों का समावेश हो जाता है, लेकिन प्रणामी भक्ति धारा को इसकी संपूर्ण विशेषताओं के साथ किसी भी धारा में समाहित नहीं किया जा सकता है। अत: यह भक्ति धारा, मध्यकालीन सभी भक्ति धाराओं की विशेषताओं को अपने में समाहित करता हुआ, एक नई समन्वयवादी धारा प्रस्तुत करता है, जिसे मध्यकाल की पाँचवी भक्ति धारा के नाम से सम्बोधित किया जा सकता है, जैसा कि डॉ लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने अपने इतिहास ग्रंथ में किया है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि महामति प्राणनाथ की दार्शनिक विचारधारा अद्वितीय है। केवल अक्षरातीत ब्रह्म को सत्य मानकर उन्होंने अन्य सभी सांसारिक पदार्थों को भ्रमयुक्त, नश्वर और क्षणभंगुर बताया है, जिसकी रचना अक्षरातीत ब्रह्म के इच्छा अनुरूप होती है। सांसारिक पदार्थों के साथ-साथ यह संसार भी उनकी दृष्टि में नाशवान एवं ईश्वरेच्छा से निर्मित है। जीव और ब्रह्म के बीच के सम्बन्ध को उन्होंने बूंद और समुद्र की तरह बताया है। 'माया बहुत जोरावर हती, दूरी करी मेरे प्राणपति' कहकर उन्होंने माया की प्रबल शक्ति की ओर संकेत कर उसे आत्मा-परमात्मा में भेद कराने वाली शक्ति बताया है। अज्ञानी सांसारिक जीव इस माया के मोहपाश में बंधकर जीवन-मृत्यु के चक्कर में पड़ा रहता है। निष्काम कर्म और प्रेमाभक्ति से ही उसे मुक्ति मिल सकती है। उनके दार्शनिक विचारधारा को देखकर ऐसा प्रतीत होता है, जैसे संतो, सूफियों एवं सगुण भक्तों की दार्शनिक विचारधारा पूर्ण रूप से समाहित हो गई है।

भारत जैसे विभिन्नता वाले देश में धर्म और सम्प्रदाय को लेकर मतभेद उजागर होते रहते हैं। इतिहास इस बात की साक्षी है कि समय-समय पर जिज्ञासु एवं प्रबद्ध समाज सुधारकों द्वारा जनता को सही दिशा और राह पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया जाता रहा है। कबीर, नानक, तुलसी आदि का प्रयास इस दिशा में उल्लेखनीय एवं स्तुत्य है। संत महामति भी ऐस ही सामाजिक एवं धार्मिक सुधारक थे, जिन्होंने रीतिकाल के घोर विषमता के वातावरण में अवतरित होकर दर्शन और भक्ति का ऐसा सहज-सरल मार्ग प्रस्तुत किया, जो तत्कालीन समाज के लिए तो उपयोगी था ही, वर्तमान युग में भी उसकी उपयोगिता किसी भी दृष्टि से कम नहीं हुई है। महामति प्राणनाथ अत्यन्त जागरूक युग पुरुष थे। वे विश्व धर्म के आधार पर देश में वास्तविक एकता स्थापित करना चाहते थे। उनका 'प्रणामी धर्म' अथवा 'निजानंद सम्प्रदाय' व्यापक मानव धर्म का ही एक रूप था।'[9] समाज में धार्मिक एकता लाने के लिए उन्होंने मूर्तिपूजा, जाति-पाँति, ऊँच-नीच, तथा अन्य बाह्याडम्बरों

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

डॉ० सुलक्षणा टोप्पो
डॉ० संध्या कुमारी
ई/३५, जीनिया,
आशियाना गार्डेन्स सोनारी,
जमशेदपुर, झारखण्ड

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

का जमकर विरोध किया। अपनी प्रार्थना सभा में उन्होंने 'श्रीमद्भागवत्' और 'कुरान' का पाठ साथ-साथ करवाया। उन्होंने तो स्पष्ट कहा है :-

'जो कुछ कह्या वेद ने, सोई कह्या कतेब।
दोऊ बंदे एक साहेब के, पर लड़त बिना पाये भेद।।'

सद्गुरू से प्रेरणा अर्जित कर महामति प्राणनाथ ने विश्व-धर्म का स्वरूप उपस्थित कर जन-जन के मध्य धार्मिक-सहिष्णुता तथा सभी धर्मों के सार के गुह्य ज्ञान का जो दीप जलाया है, उसके लौ को निरन्तर प्रज्ज्वलित रखने की तथा उस दर्शन को समझने की आवश्यकता आज भी बनी हुई है। आज की विषम परिस्थिति में उनकी वाणी वह अचूक बाण सिद्ध हो सकती है, जिससे समाज और देश में एकता कायम होने की पूरी सम्भावना है।

संदर्भ ग्रन्थः-

1. डॉ0 लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 190
2. विमला मेहता, जागनी - 1986, पृष्ठ 9
3. डॉ0 वीणा भगत, महामति प्राणनाथ मनीषा, पृष्ठ 15
4. डॉ0 वीणा भगत, महामति प्राणनाथ मनीषा, पृष्ठ 19
5. डॉ0 वीणा भगत, महामति प्राणनाथ मनीषा, पृष्ठ 19
6. किरंतन - 3/3
7. सनंध, हिन्दी छाया, भूमिका, पृष्ठ - 17
8. जागनी-1992, पृष्ठ - 136
9. हिन्दी साहित्य कोश, भाग - 1, पृष्ठ 354

सहायक ग्रन्थ :-

1. महामति प्राणनाथ, 'श्री तारतम सागर', नवतनपूरी धाम, जामनगर, 2006
2. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, 2002
3. जागनी, श्री प्राणनाथ मिशन, दिल्ली, 1986, 1992
4. साहा, डॉ0 रणजीत, 'प्रथम प्रणाम', श्री प्राणनाथ मिशन, दिल्ली, 1988
5. मेहता, विमला, 'विश्व शान्ति की ओर महामति प्राणनाथ : भारतीय धर्म और इस्लाम', श्री प्राणनाथ मिशन, दिल्ली, 2004
6. माताबदल, डॉ0 जयसवाल, महामति प्राणनाथ प्रणीत तारतम वाणी, कुलजम स्वरूप परिचय, श्री प्राणनाथ मिशन, दिल्ली
7. वार्ष्णेय, डॉ0 लक्ष्मी सागर, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, 1978
8. राम, डॉ0 शिवमंगल, 'स्वामी लालदास कृत महामति प्राणनाथ बीतक का मध्यकालीन भारतीय इतिहास में योगदान', श्री प्राणनाथ मिशन, दिल्ली, 1996
9. भगत, डॉ0 वीणा, 'महामति प्राणनाथ मनीषा', श्री प्राणनाथ मिशन, दिल्ली, 1987
10. मेहता, विमला एवं साहा, डॉ0 रणजीत, 'सनंध', श्री प्राणनाथ मिशन, दिल्ली, 1988
11. मेहता, विमला एवं साहा, डॉ0 रणजीत, 'खुलासा', श्री प्राणनाथ मिशन, दिल्ली, 1989

SHODH SANCHAYAN